[illegible]

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर

कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

B.S.E.R. Q

क्रम संख्या 2246772

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय Hindi

परीक्षा का दिन Tuesday

दिनांक 21/3/23

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	3
2	5	20	3
3	12	21	4
4	2	22	3½
5	2	23	4
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	78½
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	2	अंकों में	शब्दों में
17	3	79	उन्यासी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 46329

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है।168/2021

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार हैं। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

प्रश्न 1) अ भय

2) स स्थायी

3) अ शोषण की प्रक्रिया

4) अ वर्णवृत्ति से

5) (द) छात्रसंघ की

6) ब बचपन

7) अ भार

8) अ पवित्र

9) स बचपन

10) द कुटिया

11) अ हिरोशिमा के परमाणु विस्फोट का

12) ब माता का अन्चॅल

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	प्र.२	रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए:-
1	1.	भाववाचक
1	२.	निजवाचक सर्वनाम
1	3.	अकर्मक
1	४.	दो
0	5.	२२
1	6.	कृत
	प्र.3	अति लघूत्तरात्मक
1	1)	यण संधि → जब स्वर का स्वर से मेल होता है और मेल के बाद जो विकार उत्पन्न होते है उन्हे यण संधि कहते है यण संधि स्वर संधि के अन्दर आती है अथवा यण संधि बनने के बाद हलन्त य, व या र मे परिवर्तित होता है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2 द्विगु समास :- जिस शब्द मे पहला पद संख्यावाची होता है वो द्विगु समास के अन्तर्गत आते है - चौराहा - चार राहों का समूह

द्वन्द्व :- जिस समास मे दोनो पद प्रधान होते है अथवा विलोम शब्द भी पाए जाते है और जिन्हे बनाते समय बीच मे और लगा जाए वो शब्द द्वन्द्व समास मे आते है जैसे : माता - पिता - माता और पिता

1

3. कीचड़ उछालना ⇒ आरोप लगाना

1

4. एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ⇒ एक गलती करने पर एक के साथ सब फसते है।

1

5. 'बालगोबिन भगत' पाठ के माध्यम से लेखक हमे यह दर्शाना चा रहे है कि जैसे बालगोबिन जी इस मोह के संसार मे रहकर भी इससे दूर है वो हमेशा अपने भजन - गीत मे हि लगे रहते है जैसे जब उनके पुत्र कि मृत्यु के बाद भी वो भजन गा रहे थे क्योंकि उनको किसी से मोह नही था ऐसे हि संसार के सारे

1

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्यक्तियों को मोह से हटकर अपने भगवान मे लीन होजाना चाहिए और जीवन - मरन की बातो को स्वीकार ना चाहिए।

6. नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की से बाहर फेककर तौलिए से हाथ और होंठ पोछकर यह दर्शाया कि नवाबी लोग कैसे भोजन करते है उनका तो किसी चिज्ज को सुघँकर हि मन भर जाता है और खीरे उनके लिए बहुत छोटी चीज्ज है यह सब भावो को नवाब साहब ने लेखक को दर्शाया।

7. मानवीय करुणा की दिव्य चमक संस्मरण फादर कामिल बुल्के के संबंध मे है।

8. एक कहानी यह भी मे मन्नू भण्डारी पर उनकी अध्यापक शीला अग्रवाल और उनकी मित्र और उनकी खुद अपने ~~स~~ देश को स्वतंत्र कराने की

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

भावना से का प्रभाव अधिक उभर कर आया है।

9. गोपियो ने हारिल की लकरी श्रीकृष्ण को कहा है। क्योकि वो हारिल पक्षी कि तरह श्री कृष्ण को अपने साथ रखना चाहती है जैसे हारिल पक्षी अपनी लकड़ी को अपने साथ रखता है।

10. जैसे आकाश मे चारो तरफ सितारे छाए हुए है और वो सितारे मोती की तरह चमक रहे है और मानो ऐसा लग रहा है कि किसी लड़की ने मोती की माला धारण कर रखी हो।

11. खैरियत चाहते हो तो अपना कफन लेकर यहाँ से सीधे चले जाओ यह वाक्य एही ठैयां झुलनी हेरानी हो रामा से लिया गया है और यह वाक्य फेकू या किसी पुरुष ने गोरे सिपाही को कहा था।

12. लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा क्योकि उन्हे अपने देश को स्वतंत्र कराना था किसी कि वजह से वो अपने मार्ग पर निकल परन्तु उनके पिता के द्वारा वह घर से से बाहर ना जाने कि बात पर लेखिका ने यह कहा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(खण्ड-ब)

प्र.4 कैप्टन को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के प्रति अत्यंत लगाव था और उसे नेताजी की मूर्ति बिना चश्मे के अच्छी नही लगती थी इसी कारण वश वह नेताजी कि मूर्ति पर चश्मा लगा दिया करता था और ना ही कैप्टन सेनानी था ना ही आजाद फौज हिन्द का सिपाही फिर भी उसमे नेताजी के प्रति आदर कि भावना थी।

2

प्र.5 भगत का निर्णय अटल था। तू जा नहीं तो मै ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा यह कथन बालगोबिन भगत ने इसलिए कहा क्योंकि उनके पुत्र के शांत (मर) जाने के बाद उनकी बहू का क्या होगा इसी कारण वश बालगोबिन जी अपनी बहू को अपने भाई के साथ अपने घर भेजना और उसकी दूसरी शादी करवाना चाहते थे किसी कारण बहू ने उन्हे अकेला छोड़ने के लिए मना कर दिया। इसी वजह से बालगोबिन जी ने उन्हे कहा कि अगर वो नही गई तो वो खुद चले जाएंगे।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	प्र.6	लेखक के गाडी मे बैठने पर नवाब साहब ने यह प्रतिक्रिया की उन्होने लेखक को नजर अंदाज करना शुरु कर दिया और वो अजीब सा बर्ताव करने लगे किसी कारण लेखक को उनकी यह प्रतिक्रिया अच्छी नही लगी।
2	प्र.7 1)	फादर कामिल बुल्के के व्यक्तित्व की दो विशेषताँए फादर सरल और शांत सौभाव के व्यक्ति थे।
	2)	वो भले हि बैलजियम मे जन्मे पर उन्हे भारत वह भारतीय संस्कृति से अधिक लगाव था इसी कारण वो हिन्दी को भारत कि राष्ट्रभाषा बनाने मे जुट गए।
2	प्र.8	गोपियो को उद्धव का संदेश इसलिए पसंद नही आया क्योंकि उन्हे लगता था कि श्रीकृष्ण मथुरा से वापिस लौटकर आ जाएंगे परन्तु कृष्ण ने उद्धव के हातो योग सन्देश भीजवाकर गोपियों कि सारी भावनाओ को हानी हुई इसी कारण गोपियो को उद्धव का संदेश पसंद नही आए।
2	प्र.9	लक्ष्मण के वचनो से बढ़े हुए को परशुराम जी के क्रोध को राम जी ने शांत किया उन्होंने लक्ष्मण कि तरफ से परशुराम जी

BSER_168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		से क्षमा माँगी अपने मिठी वानी से परशुराम जी को क्रोध शाँत किया।
2	प्र10	संगतकार कविता संगतकार के महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाती है क्योंकि संगतकार वो है जो मुख्य गायक का हर परिस्थिति साथ देता है और संगतकार और कोई नही बलकि मुख्य गायक के पीछे खड़े उसके साथक ही है जो उसका हर पल साथ निभाकर उसका आत्मविश्वास को बनाए रखते है।
2	प्र11	कवि ऋतुराज ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वो जानते है कि लड़की की नई-नई शादि हुई है तो लड़की को सिरफ उसके सुख का पता है परन्तु दुख का कोई ध्यान ही नही है क्योंकि वो अभी इतनी चतुर नही है वो तो सीधी साधी है इसी कारण कवि ने कहा है कि उसको सुख का पता है पर दुख का नही।
2	प्र12	लोग स्तॉक जगह का यह महत्व यह कि यह जगह बहुत शाँत जगह है यहा का वातावरण शुद्ध है इसी कारण लोग यहा दूर-दूर से आते है और माना जाता है कि यहा आकर सारे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

भावों का विनाश हो जाता है।

प्र13. मूर्तिकार ने अन्त मे जार्ज पचंम की नाक का यह हल निकाला कि उन्होंने कहा कि अब इस मूर्ति पर किसी जिवत व्यक्ति कि नाक काटकर लगाई जाई फिर किसी व्यक्ति की नाक काटकर मूर्ति पर लगाई गई।

प्र14. माता का अन्चँल पाठ के शीर्षक की यह सार्थकता यह कि भले हि बच्चा अपने पिता से कितना भी प्यार क्यों ना करता है दिन भर खेलता हो अपने पिता के साथ ज्यादा समय बिताता हो परन्तु बिपत्ती आने के बाद परेशानी आने के बाद वो अपनी माँता को हि याद करता है जैसे आपने माता का अन्चँल पाठ मे देखा

प्र15. बालकृष्ण कि लिलाओ का मनोरमन वर्णन करने वाले हिन्दी साहित्य के महाकवि सूरदास का जन्म 1478 ई मे माना जाता है इनके जन्म स्थान मे मतभेद है कोई कहता है कि इनका जन्म दिल्ली सीहि के पास हुआ है और कोई कहता है कि आगरा (मथुरा) उत्तरप्रदेश के रेणुका नगर मे हुआ है और इनकी मृत्यु 1583 मे पारसौली मे हुई। इनकी प्रमुख

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रचनाँए है साहित्य लहरी, सूरसागर, सूर सरावली।

16/2 मन्नू भण्डारी का जन्म 3 अप्रैल को मध्य प्रदेश मे हुआ इनकी आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण यह अजमेर राजास्थजिस्‌ के ब्रह्मपुरि महौले मे आकर रहने लगी इन्होने भारत को स्वतंत्र बनाने मे बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इनकी इस प्रमुख रचना है मै हार गई और एक कहानी यह भी।

(2)

खण्ड - स

(3)

17/1 सप्रंसग :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक क्षितिज भाग-2 (गद्य खण्ड) के मानवीय करुणा कि दिव्य चमक नामक पाठ से अवतरित है इस गद्याश मे फादर के व्यक्तित्वो को दर्शाया गया है।

व्याख्या :- इस गद्य गद्यांश मे कवि कहता है कि फादर एक सन्यासी थे। और कभी-कभी लगता है कि वो मन से सन्यांसी नही है। जब भी फादर किसी से संबंध बना लिया

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

करते थे तो तोड़ते नेही थे। आप उनसे कभी - भी मिल लो वो वैसे के वैसे हि रहते थे। जब भी फादर दिल्ली आते तो वो चाहे सर्दी हो या बरसात सब छेलकर समय निकालकर चाहे दो मिनट के लिए हि पर लेखक से मिलने जरूर जाते थे। और यह कौन सन्यासी करता है? उनकी बस एक हि इच्छा थी हिन्दी को राष्ट्रभाषा देखने कि। जब भी वो कई जाता तो वो यह कहा करते थे कि उनको हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे देखना है और बताते कि हिन्दी राष्ट्रभाषा कैसे बन सकती है। पर एक दिन जब उन्होंने भारत के लोगो से हि हिन्दी की उपेक्षा सुनी तो उनके मन को अधिक हानि पहुँची और वो दुखी हो गये।

विशेष :- 1) प्रस्तुत गद्यांश मे भारत के प्रति आदर कि भावना सामने आई है।
2) गद्यांश मे सरल एव वाक्यो को प्रयोग किया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. (2)

सप्रसंग :- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-2 (काव्य खण्ड) के संगतकार पाठ में से लिया गया है तथा संगतकार के रचयिता मंगलेश डबराल जी है।

व्याख्या :- कवि कहते हैं जब लेखक ऊँचे स्वर मे गाने लगता है तो उसका गला बैठ जाता है और उसकी प्रेरणा व उत्साह खत्म हो जाते हैं ऐसा लगता है मानों आवाज राख कि तरह उड़ गई हो तभी मुख्य गायक का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए संगतकार का स्वर उसका साथ देते हुए कहता है कि वो (मुख्य गायक) अकेला नहीं है। वैसे ही उसका स्वर पीछे छुट गया है परन्तु वो छुटा हुआ वापिस गा सकता है।

विशेष :- (1) प्रस्तुत पद्यांश मे छन्द व अलंकारो का प्रयोग किया गया है। (2) सरल व सात्विक भाषा का प्रयोग है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
3	19/2	संगीत एक आराधना है इसलिए जैसे कि आप सब जानते है बिसिमल्ला खाँ के बारे मे उन्होने अपने पुरा जीवन शाहनाई को सौंप दिया उन्हे उनकी शाहनाई व उनके स्वर से अत्याधिक प्रेम था और संगीत एक आराधना जैसा हि तो है अगर किसी चीज कि आराधना करने से वो और अच्छी हो जाती है वैसी हि संगीत को दोहराते रहने से इसके आधार आराधना बहुत मजबूद हो जाती है। बिस्मिल्ला खाँ को संगीत की आराधना थी इसी कारण उन्होने भगवान से अपने अल्ला से कहा कि उनका स्वर हमेशा अच्छा रहना चाहिए।
3	20/1	आत्मकथ्य जय शंकर प्रसाद जी द्वारा लीखी गई आत्मकथा है जिनमे यह बताया है कि भल्ले हि पिछले दिन कितने हि सुन्दर हो पर एक दुख का सामना करना हि ब पेड़ता है और उन्होने यह भी कहा है कि उनकी आत्मकथा बहुत बेकार है अगर उन्होने अपने पहली बाते अपनी प्रिय के साथ वाली बाते याद करी तो वो दुखी हो जायेंगे और उनकी आत्मकथा सुनकर किसी को क्या हि लाभ मिल्ले

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गए। बलकि सभ खुद को उनके इस हाल का दोषी समंज लेंगे।

(खण्ड - द)

प्रश्न निबंध

(अ) जीवन मे शिक्षा का महत्व

(i) प्रस्तावना :- शिक्षा का जीवन व मे बहुत अधिक महत्व है अगर शिक्षा शिक्षा ना होगी तो दुनईया मे कोई कैसे महापुरुष बनेगा। आईये आगे शिक्षा के बारे मे और बाते जानते है

(ii) शिक्षा का अर्थ :- शिक्षा का शाब्दिक अर्थ ग्यान होता है। परंतु शिक्षा का कोई एक अर्थ नही व्यक्त कर सकते क्योकि शिक्षा है हि ऐसी चीज जो हमे सारे संसार मे वृद्धि दिलाती है हमारी बुद्धि का सही तरीके से इसतमाल शिक्षा के योग से हि होता है आज के जमाने मे शिक्षा के बिना कुछ सम्भव नही है। अगर कुछ बनना है तो शिक्षा तो धारण करनी पड़ेगी ना।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) शिक्षा कैसे जीवन का विकास :- शिक्षा से जीवन का बहुत महत्वपूर्ण तरिके से विकास किया जा सकता है अगर व्यक्ति शिक्षा धारण करता है तो उसे सारी अच्छी-बुरी चीजो का ध्यान ज्ञान प्राप्त हो जाता है। अगर इन्सान मे बुद्धि कि वृद्धि होगी तो शरिरक व मानसिक विकास मे वृद्धि होगी। इसी कारण हमारे जीवन का विकास अधिक उज्जवल तरिके से हो सकता है परन्तु यह भी बहुत बड़ी बात है कि शिक्षा का ~~ढंग से~~ ढंग से प्रयोग शिक्षा को सही उपयोग मे लेना बहुत बड़ बुद्धि का नाम है अगर व्यक्ति शिक्षित हो गया तो उसे ये ध्यान मे रखना चाहिए कि हर बच्चा हर व्यक्ति शिक्षित होना चाहिए और अगर व्यक्ति शिक्षित हो गया है तो उसे कभी भी अपनी शिक्षित होने पर घमंड नही करना चाहिए परन्तु उन्हे अशिक्षित को भी शिक्षित कर देना चाहिए।

(iv) शिक्षा के विविध महत्व :- आज के समय मे शिक्षा के बहुत महत्व है अगर व्यक्ति शिक्षित होगा तो समाज मे उसकी इज्जत होगी सभी लोग उसे सम्मान कि नजरो से देखेंगे तथा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उनके माता पिता को भी इन पर गर्व महसूस होगा। शिक्षा प्राप्त करने से इंसान मे आत्मविश्वास कि वृद्धि होती है व इंसान कभी अपनी बात रखने के लिए खबराता नही है। वो इतना हो जाता है कि किस से कैसे व्यवार करना है। कैसे वार्तालाब करनी है।

(V) उपसंहार - उपसंहार बस यही है कि संसार के हर एक व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। और शिक्षित होकर अपने काम खुद करने चाहिए। अपना आत्मविश्वास बरकरार रखना चाहिए। अपने परिवार का शिक्षित होकर नाम रोशन करना चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न 1)
सेवा मे,
श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय
सविनय निवेदन
विषय :- खेल सामग्री मगवाँने हेतु

प्रश्न 1)
सेवा मे
श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
विशालपुर
जयपुर
विषय :- खेल सामग्री मगवाँने हेतु प्रार्थना पत्र
माननीय महोदय,
सविनय निवेदन है कि मै आपके विद्यालय का छात्र हूँ। मेरा नाम नरेन्द्र है मै 10 वी कक्षा मे पढ़ता हूँ। मै हमेशा कक्षा मे प्रतम स्थान प्राप्त करता हूँ। बल्की यही नही मै खेद-कूद मे भी बहुत आगे हूँ। मैने फुटबॉल मैच मे दो बार तीसरा स्थान प्राप्त किया है। परन्तु अब हमारी खेल सामग्री पुरी तरह टुट चुकी है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

किसी कारण मै आपसे निवेदन करता हु कि आप हमे खेल सामग्री प्राप्त करवाए । मै आपका हमेशा अभारी रहुंगा ।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नरेन्द्र
कक्षा - 10

प्र. 23 -

दिव्यांग बच्चो द्वारा बनाई गई मिट्टी की मूर्तिया

- कृपया यहा आकर भारत के होनहार बच्चो की शिल्पकारिकता देखिए
- इन बच्चो को आकर सपोट करे इनका आत्मविश्वास बढ़ाऐ

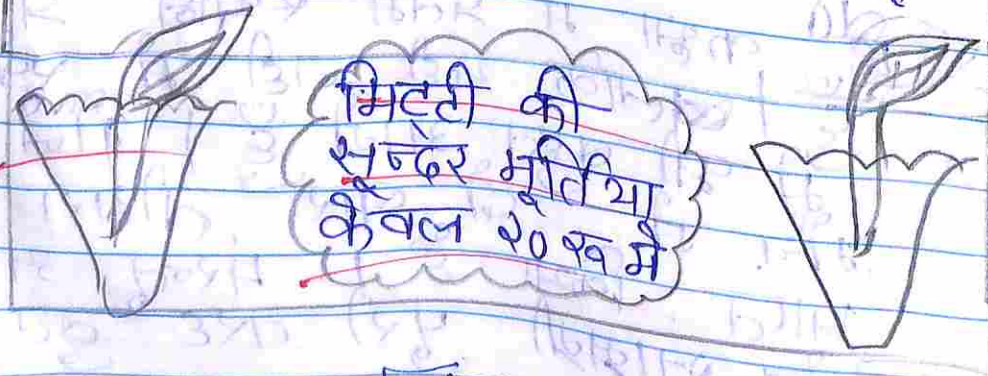

समाप्त

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		कुल प्राप्तांक = 78½
		साढ़े अठहत्तर
		8/4/23

BSER 168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(पर)ीक्षक द्वारा (प्र)दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021